ISSN: 2348-3083
SJIF 2016 : 4.44
UGC APPROVED SR. NO. 48612
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

_Xon e of.kr NUnk dk foश्लेशण

Bir Pal Singh, Ph. D.

Head- Department of Sanskrit, Government College, Gonda, Iglas, Aligarh-202123

***Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at www.srjis.com**

वेदों में छन्द का पॉचवॉ स्थान माना गया है। वेदों में स्थापित गूढ़ अर्थों के सम्यक् ज्ञान के लिए मनीषियों ने, शिक्षा लिपि आदि, जिन्हें छः वेदा का उपादेय कहा है, उनमें छन्द–शास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। सांगोपाड्. वेद– वेत्ता ही वेद को भली प्रकार से समझा सकता है। पाणिनीय शिक्षा में छन्द का महत्व स्पष्ट तथा उल्लिखित है।

इससे यह विदित होता है कि भारतीय परम्परा के अनुसार छन्दों के ज्ञान के बिना वेदार्थ का ज्ञान कदापि आगे नहीं बढ़ सकता है। अतः वेदाध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि वेद अध्येता, ऋषि, देवता, छन्द आदि का पूर्णतः ज्ञान प्राप्त करे और इसके अभाव में यज्ञ आदि कार्य में प्रवृत्त न हो। वेदौं.ों सहित वेद का अध्ययन करने वाला ब्राह्मण ब्रह्मलोक में महत्वपूर्ण स्थान को प्राप्त करता है।

वैदिक शब्दों तथा धातुओं के जो रूप इत्यादि पाणिनीय सूत्रानुसार ब्युत्पन्न नहीं होता, उनके लिए 'छन्दस्' विशेषण का प्रयोग तथा 'बहुलं छन्दासि' आदि सूत्रों का निर्देश वैदिक भाषा के लिए 'छन्दस्' शब्द सम्भवतः इसी दृष्टि से हुआ है। संहिताओं में अपाणिनीय प्रयोग मिलते हैं, उनका अधिकांश भाग छन्दोबद्ध है। निघण्टु कोष में छन्द, स्तुतिपरक आख्याताओं में पठित है।2 देवों की स्तुतियों में इसका निषेध होने के कारण ही सम्भवतः 'छन्दस्' नाम से प्रचलित हुआ। वैदिक छन्द अक्षरों की संख्या पर आधारित माने गये हैं। वैदिक मुख्यतः सात हैं, जिनके अक्षर अपने पूर्ववर्ती छन्द से क्रमशः चार–चार अक्षर अधिक हो जाते हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण में प्रातश्नुवाक के सम्बन्ध में इन सातो छन्दों के श्रोत विनियोग का निर्देश मिलता है। ये मुख्य छन्द क्रमशः– गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप एवं जगति ऋग्वेद में आये हैं।

अक्षर व पादों की न्यूनता व अधिकता के कारण इन सातों छन्दों के अनेक अवान्तर भेद हो गये हैं। इन मुख्य सातों छन्दों से अधिक अक्षरों वाले छन्दों को अतिछन्द कहा जाता है। शाड्.खायन श्रौत सूत्र, निदान सूत्र, उपनिदान सूत्र, सर्वानुक्रमणी, ऋक् प्रातिशाख्य, पिंै.ल तथा जयदेव कृत छन्दः सूत्र, वेंकट माधव कृत छन्दोऽनुक्रमणी, युधिष्ठिर–मीमांसक कृत वैदिक छन्दोमीमांसा आदि में छन्दों का पर्याप्त विवेचन मिलता है।

अक्षर गणना के आधार पर छन्दों की चार कोटियॉ बनायी गयी हैं– प्रजापत्य, दैव, आसुर तथा आर्ष छन्द। प्रजापति के छन्द आठ अक्षरों से प्ररम्भ होते हैं तथा क्रमशः इनमें चार–चार अक्षर अधिक हो जाते हैं। दैव छन्द क्रमशः एक–एक अक्षर बढ़ते जाते हैं। आसुर छन्दों में क्रमशः अधिकतम अक्षर पन्द्रह होते हैं तथा वे क्रमशः एक–एक अक्षर कम हो जाते हैं। प्रजापति, दैव और आसुरों के छन्द संगत होकर ऋषियों के छन्द होते हैं। आर्ष छन्दों में प्रायः मन्त्र और श्लोक मिलते हैं।

इन छन्दों के नाम गणना करने पर चारो प्रकार से एक से होते हैं, जिनको स्पष्ट करने के लिए निम्न सारणी को प्रस्तुत किया जा सकता है– छन्द गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् बृहती पड्.क्ति त्रिष्टुप् जगती, प्रत्येक छन्द के देवता, वर्ण तथा ऋषि का भी निर्देश इस प्रकार दर्शाया गया है–

छन्द गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् बृहती पड्.क्ति त्रिष्टुप् जगती

देवता अग्नि सविता सोम बृहस्पति वपु इन्द्र वि" वेदेवा

वर्ण भवेत सार›. पि" ा›. कृष्ण अरूण लोहित सुवर्ण

ऋषि गौतम भारद्वाज अथर्वा अ›ि.रा आ" वलायन याज्ञ– कुत्स

वल्क्य

लायन

ऋग्वेद के दशम मण्डल में इन सातों छन्दों के प्रयोग हुए हैं। अनुष्टुप के भेदों में से निचृत्, पाद–निचृत्, विराट् और भुरिक् का भी प्रयोग दशम मण्डल में हुआ है। गायत्री के भेदों में से, 'वर्णमाना', पिपिलिका मध्या' और प्रति" ठा का भी प्रयोग हुआ है। पड्ि.क्त के भेदों में 'निचृत्', 'पाद–निचृत्', 'विराट्' और आस्तार पड्ि.क्त, पश्चापड्ि.क्त, अक्षर पड्ि.क्त पड्ि.क्त तथा संसार पड्ि.क्त का प्रयोग किया गया है। वृहती में निचृत्, पाद–निचृत्, विराट् और भुरिक् का प्रयोग किया गया है। शक्वरी में पाद–निचृत्, शक्वरी का प्रयोग किया गया

है, इसका प्रयोग दो सूक्त में हुआ है।1 अति छन्दों में से मात्र 'अति जगति' का ही प्रयोग दशम मण्डल में हुआ है। इसके एक भेद 'निचृत् अति जगति' का प्रयोग भी एक स्थल पर हुआ है। अब प्रत्येक छन्दों पर क्रमशः विचार प्रस्तुत किया जा सकता है।

अनुष्टुप छन्द

अनुष्टुप छन्द बत्तीस अक्षरों का होता है। इसमें आठ–आठ अक्षरों के चार पाद होते हैं। इस छन्द को गायत्री का ही रूप माना जाता है। महर्षि यास्क के निरूक्त में यह निर्वचन मिलता है, जिसके अनुकरण करने से यह अनुष्टुप कहलाता है। तीन पादों वाली गायत्री का यह चतुर्थ पाद द्वारा अनुकरण करता है।8

अनुष्टुप का सामान्य अक्षर है– 8+8+8+8 = 32

उदाहरण– आपो अद्यान्वचारिषं, रसेन समगस्महि ।

पयस्वानग्र, आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ।।

इस छन्द के देवता सोम तथा इसका वर्ण पिशैं. माना गया है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित अनुष्टुप छन्दस्क ऋचाओं की संख्या 88 है।

निचृत्

इसमें 31 अक्षर होते हैं। एक पाद में एक अक्षर कम होता है। दशम मण्डल में वर्णित अनुष्टुप छन्दस्क ऋचाओं की संख्या 99 है।

उदाहरण– आभिभूरहमागमं, विश्वकर्मेण धाम्ना ।

आ वश्चित्तमा वो व्रतमा वोऽहं समितिं ददे ।

पाद–निचृत्

इसमें 29 अक्षर होते हैं। तीन पाद में एक–एक अक्षर कम होता है। दशम मण्डल में वर्णित अनुष्टुप छन्दस्क ऋचाओं की संख्या 14 है।

उदाहरण– त्वं त्या चिद्वातस्याश्वागा ऋज्रात्मना वहध्यै ।

ययोर्देवो न मर्त्यो यन्ता नाकिर्विदाय्यः ।

विराट्

इसमें 30 अक्षर होते हैं। दो पाद में एक–एक अक्षर कम होता है। दशम मण्डल में वर्णित अनुष्टुप छन्दस्क ऋचाओं की संख्या 43 है।

उदाहरण– यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः ।

कियाम्ब्वत्र रोहतु पाकदूर्वा व्यल्कशा ।9

8+8+7+7=30

भुरिक्

इसमें कुल 33 अक्षर होते हैं। एक पाद में एक अक्षर अधिक होता है। दशम मण्डल में वर्णित अनुष्टुप छन्दस्क ऋचाओं की संख्या 4 है।

उदाहरण– सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ।

तृतीयो अग्निष्ट पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ।10

8+9+8+8त्र33

उष्णिक् छन्द

उष्णिक् छन्द में सामान्यतः 28 अक्षर होते हैं। यह तीन पादों से समन्वीत होता है। इसके पूर्ववर्ती दो पाद आठ–आठ अक्षरों के होते हैं, तृतीय पाद बारह अक्षरों का होता है। उष्णिक् शब्द 'उष्णिष' के आधार पर निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ होता है– पगड़ी। जिस प्रकार पगड़ी शरीर के सबसे ऊॅचे भाग सिर पर स्थित होने से दूर से ही स्पष्टतः दिखलायी देती है, उसी प्रकार उष्णिक छन्द के अन्तिम चरण में चार अक्षर अधिक होने से यह बढ़ा हुआ भाग स्पष्टतः दिखलायी देता है। पगड़ी की तुलना के आधार पर इसका उष्णिक नाम पड़ा। महर्षि यास्क के निरूक्त में इसके तीन निर्वचन प्राप्त होते हैं–

1. यह छन्द गायत्री की अपेक्षा अधिक अक्षरों से युक्त है, अतः ''उष्णिक्'' कहलाया।

2. इच्छार्थक ''ष्णिह'' धातु से ''उष्णिक्'' बना है। अतः यह छन्द देवताओं कां अत्यन्त प्रिय है।

3. तुलनात्मक दृष्टि से तथा गायत्री की अपेक्षा 4 अधिकतम् अक्षर इस छन्द के ''उष्णिक्'' स्थानीय हैं, जिससे इसका नाम उष्णिक् पड़ा है।11

इस छन्द के देवता सविता तथा इसका वर्ण सार्रै. कहा गया है। उष्णिक् छन्द की सामान्य अक्षर संख्या 8+8+12 28 मानी गयी है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में 5 ऋचाओं में उष्णिक् छन्द का प्रयोग मिलता है।7

निचृत्

इसमें 27 अक्षर होते हैं। एक पाद में एक अक्षर कम होता है। दशम मण्डल में वर्णित निचृत् उष्णिक् छन्दस्क ऋचाओं की संख्या 4 है।

उदाहरण– यज्ञे यज्ञे स मर्त्यो देवान्त्सपर्यति ।

यः सुभ्रै दीर्घश्रुत्तमः आविवासात्येनान् ।।

7+6+8+6=27

विराट्

इसमें 26 अक्षर होते हैं। दो अक्षर कम होता है। विराट् उष्णिक् छन्दस्क ऋचाओं की संख्या 3 मात्र है।

उदाहरण– अव नो वृजिना, शिशी ह्यृचा वनेमानृचः ।

ना ब्रह्मा यज्ञ ऋधम्जोषति त्वे ।

भुरिक्

भुरिक् उष्णिक् में कुल 29 अक्षर होते हैं, इसमें एक अक्षर अधिक होता है। दशम मण्डल में उष्णिक् छन्दस्क केवल एक ही ऋचा है।

गायत्री

गायत्री का स्थान वैदिक छन्दों में अग्रणी है। निरूक्तकार यास्क गायत्री की ब्युत्पत्ति स्तुत्यर्थक 'गै' धातु से मानते हैं और इसके तीन चरण से युक्त होने से 'त्रि' तथा गमन को विपरित करके गायत्री शब्द का निर्माण हुआ है। ब्रह्माजी मुख से इस छन्द की उत्पत्ति होने का प्रमाण मिलता है।3

गायत्री छन्द में कुल 24 अक्षर होते हैं। आठ–आठ अक्षरों का तीन चरण होता है। इस छन्द के देवता अग्नि तथा इसका वर्ण श्वेत माना गया है। ऋग्वेद दशम मण्डल में वर्णित गायत्री छन्दस्क ऋचाओं की संख्या 48 है।

उदाहरण– शंनोदेवी रभिष्टय आपोभवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रववन्तुनः।12

8+8+8=24

वर्धमाना गायत्री

ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित तीन ऋचाओं में वर्धमाना गायत्री

का उल्लेख मिलता है। इसके तीन पादों में क्रमशः 6+7+8=21 अक्षर होते हैं।

उदाहरण– ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्। अपोयाचामिभेषजम्।।

प्रतिष्ठा

ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित केवल एक ही ऋचाओं में प्रतिष्ठा गायत्री का उल्लेख मिलता है। इसके तीन पादों में क्रमशः 8+7+6=21 अक्षर होते हैं।

उदाहरण– आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे3मम। ज्योक् च सूर्यं दृशे।।

पिपिलिका मध्या

ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित केवल एक ही ऋचा में पिपिलिका मध्या गायत्री का उल्लेख मिलता है। इसके तीन पादों में क्रमशः 8+8+5=21 अक्षर होते हैं।

उदाहरण– अदाभ्येन शोचिषा ऽग्ने रक्षस्त्वंदह। गोपा ऋतस्य दीदिहि।

निचृत् पिपिलिकामध्या

निचृत् पिपिलिकामध्या का भी प्रयोग केवल एक ही ऋचा में हुआ है। इसके तीन पादों में क्रमशः 7+7+5=19 अक्षर होते हैं।

निचृत् गायत्री

निचृत् गायत्री का प्रयोग ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित कुल 26 ऋचाओं में हुआ है। कुल 21 अक्षर होते हैं।

उदाहरण– जरमाणः समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन।तं त्वा हवन्त मर्त्याः।

8+8+7

पाद निचृत् गायत्री–

पाद निचृत् गायत्री का प्रयोग दशम मण्डल में कुल 5 ऋचाओं में उल्लेख हुआ है। कुल 21 छन्द होते हैं–

उदाहरण– तं मर्ता अमर्त्य घृतेनाग्निं सपर्यत। अदाभ्यं गृहपतिम्।

6+8+3

विराट् गायत्री–

विराट् गायत्री का प्रयोग ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित कुल 18 ऋचाओं में हुआ है। इसमें कुल 21 अक्षर होते हैं।

उदाहरण– तवमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः।तवं वृशन् वृथेदसि।

स्वराट् गायत्री

केवल एक ही ऋचा में का प्रयोग ऋग्वेद में स्वराट् गायत्री का उल्लेख है। इसमें कुल 26 अक्षर अर्थात् दो पाद में एक–एक अक्षर अधिक होता है।

उदाहरण– जोषा सवितर्यस्य ते हरः शतं सवॉ अर्हति।

पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः।

आर्ची स्वराट् गायत्री

आर्ची स्वराट् गायत्री का भी प्रयोग दशम मण्डल में वर्णित एक ही ऋचा में हुआ है। इसमें कुल 20 अक्षर होते हैं।

उदाहरण– सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात्। अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः।

7+6+7

जगती

जगती छन्द में कुल 48 अक्षर होते हैं। इसमें 12–12 अक्षरों के चार पाद होने से इसकी संख्या 48 होती है। निरूक्तकार यास्क ने इसका निर्वचन– ''जगति गततमं छन्दः'' अर्थात् सबसे आगे आया हुआ अन्तिम छन्द कहा है। 'आचार्य दुर्ग' ने इसका निर्वचन इस प्रकार किया है– 'यह छन्द जल की लहरों की भॉति विस्तृत होता है।'' अर्थात् जल के समान विस्तार होने के कारण इसे जलकर कहा है। इस सम्बन्ध में यास्क एक उल्लेख देते हुए कहते हैं कि– स्रष्टा ने इसका सृजन किया है।' प्रस्तुत छन्द के देवता विश्वेदेवाः तथा इसका वर्ण सुवर्ण है।

ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित कुल 53 ऋचाओं में इस छन्द का उल्लेख मिलता है।

उदाहरण– पर्तै.मक्तमसुरस्य, मायया हृदा पश्यन्ति मनसाविपश्चितः।

समुद्रे अन्तः कवयो विचक्षते मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः।

12+12+12+12=48

निचृत्

निचृत् जगती का प्रयोग, ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित कुल 87 ऋचाओं में हुआ है। इसमें एक पाद में एक अक्षर कम होता है। कुल 47 अक्षर होते हैं।

उदाहरण– उषानक्ता बृहती सुपेशसा द्यावाक्षामा वरूणो मित्रो अर्यमा ।

इन्द्रं हुवे मरुतः पर्वतॉ अप आदित्यान् द्यावा पृथिवी अपः स्वः।

12+12+12+11=47

पाद निचृत् जगती

पाद निचृत् जगती का प्रयोग, ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित कुल 45 ऋचाओं में हुआ है। इसमें एक पाद में एक अक्षर कम होता है। कुल 48 अक्षर होते हैं।

उदाहरण–

इन्दाग्नी वृत्र हत्येशु सत्पती मिथो हिन्वाना तन्वा समसमोमोकसा अन्तरिक्षं मह्या पप्नुरोजसा सोमो घृत श्रीर्महिमानभीरयन्।

12+11+11+12=45

विराट् जगती–

विराट् जगती का प्रयोग, ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित कुल 96 ऋचाओं में हुआ है। इसमें कुल 48 अक्षर होते हैं। इसके दोनों पाद में एक–एक अक्षर कम होता है।

उदाहरण– आ वो घियं यज्ञिया। वर्त ऊतये देवा देवी यजतां यज्ञियामिह।

सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ।

12+12+11+11=46

भुरिक् जगती–

भुरिक् जगती का प्रयोग, ऋग्वेद के दशम मण्डल में केवल एक ऋचा में हुआ है। इसमें कुल 49 अक्षर होते हैं। इसके एक पाद में एक अक्षर अधिक होता है।

12+12+12+13=49

स्वराट् जगती

स्वराट् जगती का प्रयोग भी ऋग्वेद के दशम मण्डल एक ऋचा में ही हुआ है। इसमें 50 अक्षर होते हैं।

त्रिष्टुप

त्रिष्टुप छन्द का वैदिक छन्दों में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसका प्रयोग ऋग्वेद में सर्वाधिक हुआ है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 253 स्थलों पर ही त्रिष्टुप छन्द का प्रयोग हुआ है।2 निरूक्तकार यास्क ने इसका निर्वचन 'तर्णितम' (सर्वाधिक विस्तृत) छन्द कहकर किया है। इस छन्द के देवता इन्द्र तथा इसका वर्ण लोहित है। इसके महत्व को दृष्टि में रखकर कात्यायन ने इसकी परिभाषा दी है, जहॉ पर छन्द और देवता का निर्देश न हुआ हो, वहॉ इन्द्र देवता और त्रिष्टुप छन्द समझना चाहिए।

उदाहरण– गर्भे नु नौ जनिता दम्पती क र्देवस्त्वष्टा सविताविश्वरूपः ।

नकिरस्य प्रमिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी ।

निचृत् त्रिष्टुप

निचृत् त्रिष्टुप का प्रयोग दशम मण्डल में 288 ऋचाओं में मिलता है। इसमें एक पाद में एक अक्षर कम होता है। कुल 43 अक्षर होते हैं। 11+11+10+11=43

उदाहरण– य आत्मदाबलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।

यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मैदेवाय हविषाविधेम।

पादनिचृत्

पादनिचृत् त्रिष्टुप का प्रयोग दशम मण्डल में 35 ऋचाओं में मिलता है। इसके तीन पाद में एक–एक अक्षर कम होता है। कुल 41 अक्षर होते हैं। उदाहरण– वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दाक्षायभियसं दधाति।

अध्यनच्च व्यनच्च ससिनसंतेनवन्त प्रभृतामदेषु।

10+11+10+10=41

विराट् स्थाना

ऋक् प्रातिशाख्य के अनुसार त्रिष्टुप का एक या अनेक पाद 9 या 10 अक्षरों का हो और एक या अनेक पाद ग्यारह अक्षरों का हो, तब उस अवस्था में त्रिष्टुप का अभिधान विराट् स्थाना होता है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित विराट् स्थाना त्रिष्टुप् 50 ऋचााओं में मिला है।

विराट् रूपा

ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित कुल 6 ऋचाओं में विराट् रूपा का उल्लेख हुआ है। इसमें भी कुल 41 अक्षर होते हैं। एक पाद में आठ अक्षर शेष तीनों पादों में 11–11 अक्षर है।

11+11+11+8=41

विराट् त्रिष्टुप

विराट् त्रिष्टुप में कुल 42 अक्षर होते हैं। दो पाद में एक–एक अक्षर कम होते है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 170 ऋचाओं में विराट् त्रिष्टुप का प्रयोग मिला है।

उदाहरण– यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।

यस्येमा प्रदियाो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।

10+11+10+11=42

भुरिक्

भुरिक् त्रिष्टुप में कुल 45 अक्षर होते हैं। इसके एक पाद में एक अक्षर अधिक होते है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 41 ऋचाओं में भुरिक् त्रिष्टुप का प्रयोग मिलता है। इनके पादों की अक्षर संख्या क्रमशः 11+11+12+11=45 है।

स्वराट्

स्वराट् त्रिष्टुप में दो अक्षर अधिक होते हैं। इसमें कुल 46 अक्षर होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 5 ऋचाओं में स्वराट् त्रिष्टुप का प्रयोग मिलता है। इनके पादों की अक्षर संख्या क्रमशः 11+11+13+11=46 है।

पडि.त

वैदिक छन्दों में बृहति के बाद पडि.त का स्थान है। इसमें आठ–आठ अक्षर के पॉच पाद होते हैं। कुल मिलाकर इस छन्द में 40 अक्षर होते हैं।

वैदिक छन्दों में अक्षरों की अधिक महत्ता के कारण वे सभी छन्द जिसमें अक्षर संख्या 40 हो चाहे पाद के हों या पॉच पाद के पडि.त छन्द के अन्तरगत आते हैं, परन्तु 8–8 पादों प×चपदा पडि.त सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। दशम मण्डल में इसका उदाहरण इस प्रकार है–

वि हि सोतो रसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत।

यत्रामद द्वृषाकपि रर्यः पुष्टेषुमत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।

8+8+8+8+8=40

यह पडि.त के मुख्य स्वरूप को प्रदर्शित करती है, इसलिए इस छन्द का नाम पङ्.त छन्द रखा गया है। इस छन्द के देवता मित्र और वरूण तथा इसका वर्ण नील है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 39 ऋचाओं में पडि.त छन्द का उल्लेख किया गया है।

आस्तार पङ्ि.त

यदि 8–8 अक्षरों वाले दो पाद आदि में हो तो वह पडि.त आस्तार पडि.त कहलाती है। इसके प्रत्येक पाद में क्रमशः 8+8+12+12=40 अक्षर होते हैं।

प्रस्तार पङ्ि.त

यदि 8–8 अक्षरों वाले दो पाद अन्त में हो तो वह पडि.त प्रस्तार पडि.त कहलाती है।

12+12+8+8=40

इसी प्रकार थोड़े अन्तराल से 'आस्तार, विस्टार' तथा 'संस्तार' पडि.त होती है।

आस्तार– 8+8+12+12=40

विस्टार– 8+12+12+8=40

संस्तार– 12+8+8+12=40

निचृत्

निचृत पडि.त में एक अक्षर कम होता है। इसमें कुल 39 अक्षर होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 36 ऋचाओं में निचृत पडि.त का प्रयोग मिलता है। इनके प्रत्येक पादों की अक्षरों का क्रम इस प्रकार है–

10+10+10+9=39

पाद–निचृत

इसके तीन पादों में एक–एक अक्षर कम होता है। इसमें कुल 37 अक्षर होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 7 ऋचाओं में पाद–निचृत पङ्.त का प्रयोग मिलता है। इनके प्रत्येक पादों की अक्षरों का क्रम इस प्रकार है–

7+8+7+7+8=37

विराट्

इसमें कुल 38 अक्षर होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 19 ऋचाओं में विराट् पङ्. त का उल्लेख मिलता है। पादों और अक्षरों का क्रम इस प्रकार है–

8+7+8+7+8=38

बृहती

बृहती छन्द सातों छन्दों का मध्यवर्ती माना गया है। इस छन्द में चार पाद और 36 अक्षर होते हैं, जिसमें तीसरा पाद बारह तथा शेष 8–8 अक्षरों के होते हैं। निरूक्तकार यास्क ने बृहती का निर्वचन इस प्रकार किया है– परिबृहत् अर्थात् बढ़ा हुआ होने के कारण इसे बृहती कहा गया है। इस छन्द के देवता बृहस्पति तथा इसका वर्ण कृष्ण है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित 9 ऋचाओं में बृहती का उल्लेख मिलता है।

इसका सामान्य अक्षर इस प्रकार है– 8+8+12+8=36

निचृत्

8–8 ऋचाओं में निचृत् बृहती का उल्लेख दशम मण्डल में प्राप्त होता है। इसमें कुल 35 अक्षर होते हैं, एक अक्षर कम होता है। पादों और अक्षरों का क्रम इस प्रकार है–

8+8+11+8=35

पाद निचृत्–

केवल दो ऋचाओं में इसका उल्लेख मिलता है। इसमें दो अक्षर कम कुल मिलाकर 34 अक्षर होते हैं। सामान्य अक्षर इस प्रकार है– 8+10+8+8=34

भुरिक

भुरिक बृहती में कुल 37 अक्षर होते हैं, एक अक्षर अधिक होता है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित केवल एक ही ऋचा में भुरिक बृहती का उल्लेख मिलता है।

अति जगती

अति जगती 52 अक्षरों की होती है।1 यह अति छन्द में आता है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित केवल एक ही ऋचा में अति जगती का उल्लेख मिलता है। एक अक्षर कम होने से निचृत् अति जगती होती है। इसमें 51 अक्षर होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित केवल एक ही ऋचा में इसका भी उल्लेख मिलता है।

पाद–निचृत् शक्वरी

ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित दो ऋचाओं में पाद–निचृत् शक्वरी का उल्लेख मिलता है। इसमें कुल 53 अक्षर होते हैं। इसके पॉच पाद में क्रमशः 11+10+10+11+11=53 अक्षर होते हैं।

स्वर

स्वर लौकिक और वैदिक दोनों वाड्.मय में शब्दों के उचचारण के साथ सम्बन्ध रखता है। 'स्वर' शब्द 'स्व्' धातु से अप् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है।

वेदों के वास्तविक अभिप्राय तक पहुॅचने के लिए जितने भी साधन हैं, उनमें स्वर का सबसे प्रमुख स्थान है। ब्याकरण और निरूक्त जैसे प्रमुख साधन भी इसके सहयोग से ही वेदार्थ तत्व का प्रतिपादन कराते हैं। स्वरशास्त्र के विरोध होने पर ये दोनों शास्त्र वेदार्थ ज्ञान में असमर्थ बने रहते हैं। स्वर के बिना मन्त्र का वास्तविक अभिप्राय आात ही नहीं रहता है, अपितु अर्थ का ज्ञान नितान्त आवश्यक माना गया है।

स्वर लौकिक और वैदिक दोनों वाड्.मयों में अनेक अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। निघण्टु में यह वाड्.मय पठित है।1 सामान्य रूप से पाणिनीय ब्याकरण और वेद में उदात्त, अनुदात्त, स्वरित के रूप में स्वर अभिहित हैं। वेदों में ऋग्वेद के सूक्तों, यजुर्वेद और सामवेद के मन्त्रों के ऊपर ऋषि, देवता और छन्दों के साथ स्वरों का भी निर्देश रहता है। ये मन्त्रों के स्वर से भिन्न हैं।

इनका सम्बन्ध मन्त्रों के पाठ की दृष्टि से उच्चारण के साथ नहीं होता है, अपितु गायन के साथ होता है। ये मन्त्रों के नहीं अपितु स्वरों के छन्द कहे गये हैं। यहॉ उदात्त आदि स्वर प्रतिपाद्य नहीं है। इस पर अधिकांश कार्य किया जा चुका है, जिस प्रकार ऋषि, देवता और छन्दों के विषय में विचार प्रस्तुत किया गया है, उसी प्रकार गायन से सम्बद्ध छन्दों के स्वरों पर विचार प्रसतुत करना हमारा अभिप्राय है।

वेदों में गायत्री आदि सात छन्दों का प्रयोग किया गया है। इनमें प्रत्येक छन्द का अपना–अपना स्वर है। यथा–

छन्द स्वर

गायत्री षड्ज

उष्णिक् ऋषभ

अनुष्टुप् गान्धार

बृहती मध्यम

पडि.त पंचम

त्रिष्टुप् धैवत्

जगती निषाद।

इसके अतिरिक्त अतिछन्द अति जगती का स्वर निषाद और शक्वरी का धैवत् है।

1. षड्ज स्वर– यह गायत्री का स्वर है। गायत्री तीन पादों वाली 24 अक्षरों की होती है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में गायत्री छन्द के 48 मन्त्र हैं।

2. ऋषभ स्वर– यह उष्णिक् का स्वर है। उष्णिक् छन्द तीन पाद अथवा सात अक्षर युक्त चार पादों वाली 28 अक्षरों की होती है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में उष्णिक् छन्द के 5 मन्त्र मिलते हैं।

3. मध्यम स्वर– यह चार पाद एवं 36 अक्षरों वाले बृहती छन्द का स्वर है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में बृहती छन्द के 9 मन्त्र मिलते हैं।

4. गान्धार– यह अनुष्टुप् छन्द का स्वर है। अनुष्टुप् छन्द बत्तीस अक्षरों से युक्त चार पादों वाला होता है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में इसके 99 मन्त्र मिलते हैं।4

5. पंचम स्वर– यह पडि.त छन्द का स्वर है। चार या पॉच पादों वाली पडि.त 40 अक्षरों वाली होती है। दशम मण्डल में इसके 39 मन्त्र हैं।

6. धैवत् स्वर– यह त्रिष्टुप छन्द का स्वर है। चार या पॉच पादों से युक्त 44 अक्षरों वाला होता है। दशम मण्डल में इसके 253 मन्त्र हैं। इसके अतिरिक्त शक्वरी के भी स्वर धैवत् हैं।

7. निषाद स्वर– चार पाद एवं 48 अक्षरों से युक्त जगती का स्वर निषाद है। दशम मण्डल में इसके 53 मन्त्र हैं। अति जगती का भी स्वर निषाद है।

lnHk

क– वेपि होत्र मुत पोत्रं जनानां मान्धातासि द्रविणोदा ऋतावा। ऋ0 10/2/2
ख– यद्वो वयं प्रमिनाम.....ऋतुभि कल्पयाति। ऋ0 10/2/4
ऋग्0 10/5/2, 14/10, 18/2, 30/5, 31/3, 142/3
क– चोदयतं सूनृताः .....मघवत्सु नमस्कृतम्। ऋग्0 10/39/2
ख– अहमिन्द्रो रोधो वक्षो.....मातरिश्वने।। ऋ0 10/48/2
ऋग्0 10/49/4, 65/5, 66/3, 96/7, 167/3, 170/2
ऋग्0 7/44/4
ऋग्0 7/66/7
ऋग्0 7/104/5
ऋग्0 7/63/5
ऋग्0 7/75/7
ऋग्0 10/3/5
ऋग्0 10/20/10
ऋग्0 10/130/5
ऋग्0 10/20/10